

MS. WILKINSON CALLED ME NEPHEW

A book cover illustration featuring a misty cemetery path leading to a gothic archway. In the foreground, two crossed swords with ornate hilts rest on a tombstone, with a single white rose placed between their blades. The scene is framed by dense trees and foliage, with a soft, golden light filtering through the leaves in the background.

BLADEFREGA

सुश्री विल्किंसन ने मुझे भांजा कहा

23 अगस्त 2026 का गर्म रविवार है, बहुत-से दूसरे रविवारों जैसा।

झटपट लंच कोई रियायत नहीं, एक रस्म है। दोपहर की छोटी-सी झपकी एक अपवाद है, जो सिर्फ इसलिए दिया गया कि एक अनपेक्षित घटना के बाद सुबह के डोपामाइन उत्पादन का असामान्य रूप से ऊँचा स्तर सामान्य हो सके: आज बिंग ने मेरी माँ, जिलेट, से जुड़ी एक खोज के लिए मेरे एक पेज को वेब पर पहले स्थान पर रखा।

दूसरे स्थान से मेरे दादा देख रहे हैं, और मुस्कुरा रहे हैं।

नाराज़ नहीं लगते।

आज मुझे यह भी पता चला कि किंग कैप जिलेट ने 9 जुलाई 1932 को यह दुनिया छोड़ी थी।

तारीख पढ़ते ही मैं कुर्सी से लगभग उछल पड़ा।

मेरा अपना प्रोजेक्ट, gillettenarrative.com, 9 जून 2026 को जन्मा था।

उनकी मौत के चौरानवे साल बाद।

और, अपने आप से किए समझौतों के मुताबिक, 2058 में मेरी अपनी तयशुदा विदाई से तैंतीस साल पहले।

जब तारीखें एक-दूसरे की ओर खिंचने लगती हैं, जब वे अनपेक्षित सटीकता से आपस में बैठने लगती हैं, तो यह मानने का मन करता है कि शायद कोई और एल्गोरिथ्म काम कर रहा है—ऐसा, जिसकी शक्ल उनसे बहुत कम मिलती है जिनके हम आदी हो चुके हैं।

ऐसे पलों में हमेशा की तरह मेरे साथ अंग्रेज़ी भाषा का जैज़ है।

यही अकेला संगीत है जिसे मेरा मन अब सहज रूप से ग्रहण करता है, जब से मेरे परिवार के गिटार और मैंडोलिन प्रकृति के साधारण नियमों के चलते खामोश हो गए हैं।

फिर मैं अपना ईमेल खोलता हूँ।

एक तीखी चोट सीधे दिल पर पड़ती है।

सामंथा लंदन से लिख रही है।

वह सुश्री विल्किंसन की नातिन है।

मेरी मौसी मैगी।

आड़ी-तिरछी तलवारों वाली लेडी।

वह औरत जिसने, अभी कुछ ही समय पहले और अपने पूरे परिवार के सामने, मुझे भांजा कहा था।
उसका संदेश सीधा-सादा है।
सुश्री मैगी विल्किंसन नहीं रहीं।
उनकी अपनी इच्छा से, क्योंकि वे मुझे इतना जानती थीं कि मेरी प्रतिक्रिया भाँप लें, खबर दफ़नाए जाने के बाद ही दी गई।
हम अंग्रेज़ हैं।
एक आँसू अपनी जगह ढूँढ़ लेता है।
मौत कभी ख़ूबसूरत चीज़ नहीं होती।
वह बस ऐसी चीज़ है जिसकी आप कभी ठीक से उम्मीद नहीं करते।
अपनी ज़िंदगी में जितनी औरतों से मैं मिला, उनमें इस मुँहबोली मौसी के हिस्से बस एक छोटा-सा अध्याय आया।
फिर भी उनकी भूमिका बुनियादी थी।
उन्होंने मुझे समझाया कि कुलीनता सिर्फ़ उपाधियों, कुल-चिह्नों या विरासत में मिले विशेषाधिकारों में नहीं मिलती।
वह सलीक़े में होती है।
वह बर्ताव में होती है।
वह उस गुण में होती है जिसे अंग्रेज़ी बोलने वाले अक्सर अप्लॉम कहते हैं।
उसके लिए एक ज़्यादा सादा शब्द है।
क्लास।
यह ख़त मैं उन्हें लिख रहा हूँ।
उनके परिवार के लिए।
अपने लिए।
हर उस पाठक के लिए जो शायद किसी दिन यहाँ तक पहुँचे।
और मैं ज़बानी याद एक ही वाक्य से शुरू करता हूँ:
हम जो हैं, उन लोगों की वजह से हैं जिनसे हम मिलते हैं, और यह हमसे कोई नहीं छीन सकता।
चिकित्सा साहित्य अक्सर उस अधिकार का दुरुपयोग करता है जो यक्रीन के ज़रूरतमंद मरीज़ ख़ुशी-ख़ुशी उसे सौंप देते हैं।

वह अक्सर हमें वह बताता है जो सुविधाजनक है।
वह कम ही बताता है जो अहम है।
कहते हैं कि जन्म से पाँच साल की उम्र तक बच्चों के पास यादें नहीं होतीं।
कि वे उन्हें सँजो नहीं सकते, क्योंकि ज़रूरी संज्ञानात्मक ढाँचे अभी बने नहीं होते।
उस सिद्धांत के हिसाब से हम में से हर एक को अपने भीतर पाँच साल का अँधेरा ढोना चाहिए।
फिर भी मुझे अपनी माँ के थप्पड़ याद हैं।
मुझे अपनी नर्सरी की टीचरों के थप्पड़ याद हैं।
गिनती मुझे याद नहीं।
वे सम से शुरू हुए और कभी विषम पर ख़त्म नहीं हुए।
बड़े होकर जो चोटें हमें मिलती हैं, वे भी काफ़ी हद तक इसी तरह काम करती हैं।
उन्हें कोई नहीं गिनता।
याददाश्त उन्हें आँकड़ों की तरह दर्ज नहीं करती।
वह उन्हें चुपचाप आत्मा के भीतर जमा कर देती है।
और बरसों बाद उन्हें लेखन की शक्ल में निकाल लेती है।
अलविदा, मौसी मैगी।
आपका सफ़र अब जहाँ भी आगे बढ़े, वहाँ आपका स्वागत हो।
तलवारें तब तक एक-दूसरे पर टिकी रहेंगी, जब तक वह दिन न आए जब आप उनके नीचे से गुज़रें।
विदा।
आपका भांजा।
नांदो, लेखक

फर्दिनांदो